

जप जी साहब एक अद्भुत ग्रंथ जिसमें सारा आध्यात्म आ गया है। एक वैज्ञानिक ग्रंथ जो सारी मानव जाति के लिए है। आप चाहे किसी भी पंथ को मानने वाले हों इसको पढ़ कर आप इसके मुरीद न हो जाएं यह असंभव है। सिर्फ पहले श्लोक में ही गुरु जी ने सब कुछ कह दिया है आगे तो सिर्फ उसकी विस्तृत व्याख्या है।

शंकर पुरस्वानी

8875944033

श्री जपु जी साहब

एक ओंकार सतनाम् करता पुरख
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुरु प्रसादि।

वह प्रभु या ईश्वर सत्य स्वरुप है। सत्य का अर्थ है कि जो था, है और रहेगा। वह एक है और उसके समान कोई नहीं है। वह सृष्टि करता पुरुष है। वह भय से रहित है। भय दूसरे से होता है। द्वैत जरुरी है भय के लिए। जब उसके बिना कुछ है ही नहीं फिर भय कैसा और किससे। वैर के मूल में भी द्वैत है। अतः वह वैर भाव से परे है। कालातीत और अयोनिज है। उसका जन्म–मरण नहीं होता। वह स्वयं प्रकाशमान है, स्वयंभू है। उस प्रभु की प्राप्ति गुरु कृपा से होती है।

जपु।

मूलमंत्र के बाद आने वाली इस वाणी का नाम है जप अर्थात याद कर, सिमरण कर।

आदि सचु जुगादि सचु।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।

जो सृष्टि के आरंभ से ही सच है, युगों युगों से विद्यमान है, वर्तमान में है और कई कई युग बीत जाने के बाद भी रहेगा। उसी की सत्ता सदा –सदा ही स्थिर रहने वाली है।

सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार।
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिवतार।

बाहरी शुद्धि करने से कोई पवित्र नहीं होता, चाहे कोई लाख बार शुद्धि कर ले। ज्ञान की प्राप्ति बाहरी शुद्धि से नहीं, बल्कि मन की निर्मलता से होती है। मन की निर्मलता ही सच्ची पवित्रता है। सिर्फ मौन धारण करने या संयम करने से मन शांत नहीं होता।

भुखिया भुख न उतरी
जे बना पुंरिआ भार।
सहस सियाणपा लख होहि
त ईक न चलै नालि।।

भूखे रहने से मन की भूख अर्थात तृष्णा कभी शांत नहीं होती। इसके लिए तो पुरियों वैकुंठ,इन्द्रपुरी इत्यादि का भी वैभव कम है। परमात्मा की राह पर सभी तर्क बेकार है।

किव सचियारा होइए
किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा
नानक लिखिआ नालि।।1।।

फिर वह सत्यवादी कैसे हो ? कैसे झूठी तृष्णा से मुक्ति पाए ? उसके और परमात्मा के बीच की असत्य की दीवार कैसे टूटे ? नानक जी का कहना है कि उसके हुक्म में रहना तथा उसकी रजा में चलना ही एकमात्र राह है।

हुकमि होवनि आकार
हुकुम कहिआ न जाई।
हुकमि होवनि जीअ
हुकमि मिलै वडिआई।।

उसकी आज्ञा से वस्तुएं आकार लेती है। उसके कथन की व्याख्या नहीं की जा सकती। उसी की आज्ञा से जीव उत्पन्न होते है। उन्हें श्रेष्ठ योनि या मनुष्य शरीर मिलता है।

हुकमी उतमु नीचु हुकमि,
लिखि दुख सुख पाई आहि।
इकना हुकमी बखसीस,
इकि हुकमी सदा भवाईअहि।।

परमात्मा के हुक्म से ही मनुष्य उत्तम या निकृष्ट योनियों को प्राप्त होते हैं। उसी के हुक्म से लिखे हुए कर्मों के अनुसार लोग सुख–दुख पाते हैं। उन्हें मुक्ति मिलती है या फिर नाना योनियों में भटकते रहते हैं।

हुकमै अंदरि सभु को,
बाहरि हुकम न कोई।
नानक हुकमै जे बुझै,
त हउमै कहै न कोई।।2।।

प्रत्येक प्राणी उसके हुक्म में है। उसके हुक्म से बाहर कुछ भी नहीं है। नानक जी कहते हैं कि जो हुक्म का सार जान लेता है , वो कभी कड़वे वचन नहीं कहता। यह जानने के बाद कि सबकुछ परमात्मा के हुक्म से हो रहा है, कुछ भी ऐसा नहीं बचता जिसे सहर्ष स्वीकार न किया जा सके।

गावै को ताणु होवै किसै ताणु
गावै को दाति जाणै निसाणु।।

प्रत्येक जीव अपनी शक्ति से परमात्मा का गुणगान करता है। जिसमें जितना आत्मबल या उत्साह है , वह उसकी सत्ता को उतना ही अपने भीतर अनुभव कर पाता है।

गावै को गुण वडिआईआ चार
गावै को विदिआ विखमु विचारु।

कोई उसके लक्षण और बड़ाईयों का गान करता है, कोई बौद्धिक ज्ञान द्वारा उसके नियमों उपनियमों की व्याख्या करता है।

गावै को साजि करे तनु खेह,
गावै की जीअ लै फिरि देह।

कोई यह समझकर परमात्मा का बखान करता है कि वह शरीरों को बनाकर फिर से मिट्टी में मिला देता है। कोई यह समझकर परमात्मा की बड़ाई करता है कि परमात्मा प्राण लेकर फिर जीवन देता है।

गावै को जापै दिसै दूरि,
गावै को वेखै हादरा हदूरि।

कोई उस अगम्य–अगोचर के गुण गाता है। कोई उसे अपने सामने अत्यंत निकट दसों दिशाओं में जान उसकी प्रशस्ति करता है।

कथना कथी न आवै तोटि,
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि।

उसके गुणों की कथा अनंत है। चाहे करोड़ों जीव करोड़ों जिह्वाओं से उसकी महिमा गाएं, मगर उसका कोई पार नहीं है। शब्दों का अर्थ एक

पहलू का बखान है। इसी कारण वाणी द्वारा उसका पार पाना असंभव है।

देंदा दे लैंदे थकि पाहि,
जुगा जुगंतरि खाहि खाहि।

देने वाले दाता की विभूतियों का कोई अंत नहीं है। वह तो दिए जा रहा है, लेने वाले ही थक जाते हैं। युग–युगांतरों से देता ही आया है वह। जब से सृष्टि बनी है, जीव उसके दिए पदार्थ ही तो भोग रहा है। वह थक जाता है, परंतु प्रभु देना बंद नहीं करता। ऐसा युग–युगांतरों तक होता रहेगा।

हुकमी हुकमु चलाए राहु,
नानक विगसै बेपरवाहु।।3।।

वह प्रभु इस संसार का कार्य करते हुए भी अपने कर्तापन के लिए बेपरवाह है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि अज्ञानी मनुष्य उसकी करनी को अपनी करनी बताता है। ऐसा करते देखकर वह दयालु प्रभु जीवों पर क्रोध न करके उनकी अज्ञानता पर मुस्कराता है।

साचा साहिबु साचु नाइ
भाखिआ भउ अपारु।
आखहि मंगहि देहि देहि
दाति करे दातारु।।

वह प्रभु सत्य है। उसका नाम भी सत्य है। उसकी चर्चा करने के लिए भिन्न–भिन्न भाषाएं तथा विभिन्न भाव पैदा होते हैं। जीव उसकी ही कृपा मांगते हैं। वह भी जीवों पर उनके कर्मों के अनुसार कृपा बरसाता है।

फेरि कि अगै रखीऐ
जितु दिसै दरबारु।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ
जितु सुणि धरे पिआरु।।

उसके आगे क्या पेश करें, जिससे उसका दर्शन हो। किस प्रकार उसका यशोगान करें, जिसे सुनकर वह अपना प्यार हम पर उड़ेल दे, हम पर कृपा करे।

अमृत वेला सचु नाउ वडिआई विचारु।

अमृत वेला में अर्थात् प्रातः काल उसके सच्चे नाम का जप करने से और उसका गुणगान करने से उस परमेश्वर की कृपा प्राप्त होती है। तभी तो वह अमृत वेला(इस समय मनुष्य का मन अल्फा स्टेट में होता है इस समय जो भी विचार किया जाता है वह अवचेतन मन में प्रवेश कर जाता है और जो एक बार अवचेतन में प्रवेश कर जाता है वह हकीकत में बदल जाता है।) है। यहां गुरु नानकदेव जी ने प्रातःकाल प्रभुस्मरण करने का संकेत किया है। उस समय मन में ठहराव होता है। इस एकाग्रता में ईश्वर की झलक मिलती है।

करमी आवै कपड़ा
नदरी मोखु दुआरु।
नानक एवै जाणीऐ
सभु आपे सचिआरु।।4।।

कर्मों द्वारा शरीर रूपी जामा बदला जाता है (मुक्ति नहीं मिलती)। मोक्ष–द्वार तो परमात्मा की दया से ही मिलता है। इसलिए हे नानक! ऐसा ज्ञान प्राप्त करो, जिससे सभी प्रकार के संशयों का नाश हो। साथ ही प्रभु के सर्वव्यापी तथा सर्व कर्ता होने में विश्वास जगे।

थापिआ न जाइ कीता न होइ
आपे आपि निरंजनु सोइ।

वह परमात्मा अजन्मा है। उसका जन्म नहीं होता। उसे कोई स्थापित नहीं कर सकता। उसका कोई आकार नहीं है। वह परमात्मा मायातीत है, स्वयं सिद्ध है, अनादि और अनंत है।

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु
नानक गावीऐ गुणी निधानु।

जिसने उसकी सेवा की, उसे अक्षय मान मिला। इसलिए उसके गुणों का गान करो।

गाविऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ।

गुणगान करने से, सुनने और मन में प्रेम भाव बनाने से दुखों का नाश होकर सुखों की प्राप्ति होती है।

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं
गुरमुखि रहिआ समाई।
गुरु ईसरु गुरु गोरख बरमा
गुरु पारबती माई।।

गुरु का वाणी ही नाद(शब्द) है। गुरु वाणी ही वेद है। स्वयं भगवान उसमें वास करते हैं। गुरु ही कल्याणकारी शिव, जगत पालक विष्णु , ब्रह्मा और माँ पार्वती हैं।

जे हउ जाणा आखा नाही
कहणा कथनु न जाई।

यदि मैं परमात्मा के प्रकाश को समझ भी लूं तो भी उसे कहकर नहीं बतला सकता अर्थात वह अकथनीय है।

गुरा इक देहि बुझाई।
सभना जीआ का इकु दाता
सो मैं विसरि न जाई।।5।।

गुरु ने मुझे एक सीख दी है कि प्रत्येक जीव को देने वाला एक ही है। उस मालिक को हमें कभी नहीं बिसारना चाहिए।

तीरथि नावा जे तिसु भावा
विणु भाणे कि नाइ करी।

तीर्थ पर जाकर स्नान करने से भगवान तभी प्रसन्न होते हैं, जब उन्हें स्वीकार हो। बिना उनकी स्वीकृति के कोई लाभ नहीं होता।

जेती सिरठि उपाई वेखा
विणु करमा कि मिलै लई।

इस सृष्टि में बिना कर्म के कुछ नहीं मिलता। कुछ भी प्राप्त करने के लिए जीव को कर्म करना होता है। फिर यह कैसे हो सकता है कि परमात्मा को पाने के लिए कुछ न करना पड़े। उसके लिए कर्म करना ही पड़ेगा। जब सबकुछ कर्मों के अनुसार ही मिलना है, तो अमुक वस्तु मिले जैसी वासना से कर्मकांड आदि करने की क्या उपयोगिता ?

मति विचि रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुणी।

यदि प्राणी गुरु की शिक्षाओं को जीवन में अपनाए तो रत्न, जवाहर आदि

उसे अपने ही भीतर मिल जाते हैं। ये सारी वस्तुएं तो उसके सामने मुल्यहीन हैं, जो भीतर छुपकर बैठा है।

गुरा इक देहि बुझाई।
सभना जीआ का इकु दाता
सो मैं विसरि न जाई।।6।।

गुरु ने मुझे एक सीख दी है कि प्रत्येक जीव को देने वाला एक ही है। उस मालिक को हमें कभी नहीं बिसारना चाहिए। अतः मैं उसे नहीं भूलता।

जे जुग चारे आरजा
होर दसूणी होइ।
नवा खंडा विचि जाणीऐ
नालि चलै सभु कोइ।।
चंगा नाउ रखाइ कै
जसु कीरति जगि लेइ।

मनुष्य की आयु चारों युगों जितनी हो जाए, इससे भी दस गुना बढ़ जाए, उसकी ख्याति 9 खंडों एवं 14 भुवनों में भी क्यों न फैल जाए, सब उसके साथ चलें, उसे भला कहा जाने लगे और सभी उसका यश गाएं,

जे तिसु नदरि न आवई
त वात न पुछै के।
कीटा अंदरि कीटु
करि दोसी दोसु धरे।।

लेकिन यदि वह परमात्मा की दृष्टि में नहीं आया, तो उसे कहीं सहारा नहीं मिलेगा। वह कीटों में भी नीच कीट माना जाएगा। दोषी लोग भी दोषी बताएंगे। इतना नीच और दोषों से घिरा होगा वह।

नानक निरगुणि गुणु करे
गुणवंतिआ गुणु दे।
तेहा कोइ न सुझई
जि तिसु गुणु कोइ करे।।7।।

नानक जी कहते हैं— सर्वशक्तिमान परमात्मा गुणहीनों को गुणवान और

गुणवानों को अधिक गुणी बना देता है। ऐसा कोई नहीं , जो परमेश्वर के गुणों में वृद्धि कर सके।

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ
सुणिएं धरति धवल आकास।

प्रभु के नाम श्रवण से सिद्ध, पीर, देवता और नाथों को उच्च पद प्राप्त है। इसी वजह से पृथ्वी पर धर्म की सत्ता और आकाश है।

सुणिऐ दीप लोअ पाताल
सुणिऐ पोहि न सकै कालु।

सातों द्वीप, सातों लोक एवं पाताल नाम श्रवण से ही स्थित हैं। नाम श्रवण करने वाले के पास काल कभी नहीं पहुंचता। वह अमर हो जाता है।

नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दूख पाप का नासु।।8।।

हे नानक! नाम श्रवण करने वाले भक्त सदा प्रसन्न रहते हैं। नाम श्रवण से सभी प्रकार के दुखों एवं पापों का नाश होता है। अर्थात सांसारिक सुख और ऐश्वर्य के साथ उसका आनंद में वास होता है।

सुणिएं ईसरु बरमा इंदु
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु।

शिव, ब्रह्मा और इंद्र का वर्तमान पद नाम के कारण ही अटल है। देवताओं की स्थिति के मूल में वह परमात्मा ही है। मंद जाति के लोग भी नाम स्मरण से ही पूजनीय हो गए हैं। इस तरह नाम मंद को भी पूज्य बनाने वला है।

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद
सुणिएं सासत सिम्रिति वेद।

नाम श्रवण से ही शरीर और परमात्मा के जुड़ने की युक्ति का भेद विदित होता है अर्थात यह पता चलता है किस प्रकार स्थूल शरीर उसकी सक्ष्ू म सत्ता से जुड़े हुए हैं। नाम सुनने से ही शास्त्रों, समृतियों तथा वेदों का ज्ञान हो जाता है। शास्त्र, स्मृतियां और वेदों का आधार श्रवण ही तो है।

नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दुख पाप का नासु।।9।।

हे नानक! नाम श्रवण करने वाले भक्त सदा प्रसन्न रहते हैं। नाम श्रवण से सभी प्रकार के दुखों एवं पापों का नाश होता है। अर्थात सांसारिक सुख और ऐश्वर्य के साथ उसका आनंद में वास होता है।

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु
सुणिऐ अठसठि का इसनानु।।

नाम श्रवण से ही सत्य, संतोष और ज्ञान मिलता है। प्रभुका नाम सुनने से ही 68 तीर्थों के स्नान के समान है जिससे सभी पाप धुल जाते हैं।

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु।

नाम श्रवण से ही मनुष्य को प्रतिष्ठा मिलती है। आत्महीनता की भावना सदा के लिए नष्ट हो जाती है। नाम श्रवण से ही मनुष्य सहज ध्यान की अवस्था प्राप्त करता है।

नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दूख पाप का नासु।।10।।

हे नानक! नाम श्रवण करने वाले भक्त सदा प्रसन्न रहते हैं। नाम श्रवण से सभी प्रकार के दुखों एवं पापों का नाश होता है। अर्थात सांसारिक सुख और ऐश्वर्य के साथ उसका आनंद में वास होता है।

सुणिऐ सरा गुणा के गाह
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह।

नाम श्रवण से ही गुणों के सागर का मंथन संभव हो सका है। नाम श्रवण से ही पीर , पैगंबर और बादशाहों का अस्तित्व है।

सुणिऐ अंधे पावहि राहु
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु।

नाम श्रवण से ही अंधे राह पा लेते हैं। नाम श्रवण से ही अथाह की थाह पाई जा सकती है। कठिन और असंथव कार्य भी नाम श्रवण से सुगम हो जाते हैं।

नानक भगता सदा विगासु।
सुणिऐ दूख पाप का नासु।।11।।

हे नानक! नाम श्रवण करने वाले भक्त सदा प्रसन्न रहते हैं। नाम श्रवण से सभी प्रकार के दुखों एवं पापों का नाश होता है। अर्थात सांसारिक सुख और ऐश्वर्य के साथ उसका आनंद में वास होता है।

मंनै की गति कही न जाइ
जे को कहै पिदे पछुताइ।

नाम श्रवण कर मनन करने वाले की दशा कही नहीं जा सकती। यदि कोई वर्णन करने का प्रयत्न भी करे तो कहने में त्रुटि रह जाने के कारण उसे पछताना पड़ता है।

कागद कलम न लिखणहारु
मंनै का बहि करनि वीचारु।

कागज पर लिखने वाली ऐसी कोई कलम नहीं है तथा ऐसा कोई लिखने वाला भी नहीं है , जिससे मनन की महिमा का बखान किया जा सके।

ऐसा नाम निरंजनु होइ
जेको मंनि जाणै मनि कोइ।।12।।

नाम की महिमा तो मनन करने वाला ही जानता है। कोई दूसरा उसे व्यक्त ही नहीं कर सकता।

मंनै सुरति होवै मनि बुधि
मंनै सगल भवण की सुधि।

नाम का मनन करने से ही प्रभु के प्रति प्रीति जाग्रत होती है और बुद्धि निर्मल हो जाती है। नाम मनन करने वाले को 14 भुवन तक का ज्ञान हो जाता है।

मंनै मुहि चोटा ना खाइ
मंनै जम कै साथि न जाइ।

मनन करने वाला काल की चोटों से सुरक्षित रहता है। वह मृत्यु के मुंह में भी नहीं जाता। मनन करने वाला अमर हो जाता है। उसे यमदूत नहीं ले जा पाता।

ऐसा नाम निरंजनु होइ
जेको मंनि जाणै मनि कोइ।।13।।

नाम की महिमा तो मनन करने वाला ही जानता है। कोई दूसरा उसे व्यक्त ही नहीं कर सकता।

मंनै मारगि ठाक न पाइ
मंनै पति सिउ परगटु जाइ।

नाम को मानने वाले के मार्ग में बाधाएं नहीं आतीं। वह आदर और मान पाता है।

मंनै मगु न चलै पंथु
मंनै धरम सेती सनबंधु।

नाम की दीक्षा लेने वाले मनुष्य दूसरे लोगों द्वारा चलाए गए पंथ ग्रहण नहीं करते। उनका तो सच्चे धर्म से ही दृढ़ संबंघ होता है।

ऐसा नाम निरंजनु होइ
जेको मंनि जाणै मनि कोइ।।14।।

नाम की महिमा तो मनन करने वाला ही जानता है। कोई दूसरा उसे व्यक्त ही नहीं कर सकता।

मंनै पावहि मोखु दुआरु
मंनै मंनै परवारै साधारु।

नाम मनन करने वाला ही मुक्ति पाता है। वह अपने परिवार को भी प्रभु की शरण में ले आता है। इस तरह वह खुद तरता है और अपने परिवार को भी तारता है।

मंनै तरै तारे गुरु सिख
मंनै नानक भवहि न भिख।

नाम मनन करने वाला स्वयं तो संसार सागर से तरता जाता है ,गुरुमुख शिष्यों को भी तार देता है। हे नानक! वह 84 लाख योनियों के फेर मे ं नहीं पड़ता। उसमें किसी तरह की कोई लालसा भी नहीं रह जाती।

ऐसा नाम निरंजनु होइ
जेको मंनि जाणै मनि कोइ।।15।।

नाम की महिमा तो मनन करने वाला ही जानता है। कोई दूसरा उसे व्यक्त ही नहीं कर सकता।

पंच परवाण पंच परधानु
पंचे पापहि दरगहि मानु।
पंचे सोहहि दरि राजानु
पंचा का गुरु एकु धिआनु।।

पांच गुणों(धैर्य ,धर्म, सत् ,संतोष तथा दया) को धारण करने वाले ही परमात्मा द्वारा स्वीकृत होते हैं और वही प्रतिष्ठा भी पाते हैं। वे ही राजदरबार में शोभा को प्राप्त होते हैं। पांच गुणों से युक्त संत महात्माओं का ध्यान सदैव परमात्मा की ओर होता है। परमात्मा के अलावा उनका ध्यान किसी ओर नहीं जाता।

जे को कहै करै विचारु
करते कै करणै नाही सुमारु।

यदि कोई उनसे कुछ कहे तो वे विचार कर लेते हैं कि अमुक बात ठीक है या नहीं। करतार के कार्य का कोई अंत नहीं है। वह तो सर्वदा अनंत है।

धौलु धरमु दइआ का पूतु
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।

वह सफेद बैल नहीं ,धर्म है। उसकी जननी दया है। दया के पुत्र धर्म पर पृथ्वी टिकी है पृथ्वी और संतोष रूपी सूत से बंधा हुआी है धर्म।

जे को बुझै होवै सचिआरु
धवलै उपरि केता भारु।
धरती होरु परै होरु होरु
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु।।

बैल के आगे सींग पर पृथ्वी टिकी है और उस पर सृष्टि की रचना हुई है। ऐसा समझने वाले तभी सच्चे हो सकते हैं , जब वे यह जान लें कि बैल पर कितनाभार होगा ? पृथ्वी के अलावा न जाने कितनी पृथ्वियां होंगी। यह सारा भार जिस पर है , वह स्वयं किस आधार पर खड़ा है ?

जीअ जाति रंगा के नाव
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम।
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ
लेखा लिखिआ केता होइ।।

परमात्मा की इस सृष्टि में भिन्न जातियों और अनेक रंगों के बहुत से जीव हैं। सभी के कर्म एक बेरोक कलम ने लिखे हैं। इसकी गणना कौन कर सकता है। यदि कोई करे भी ,तो वह लेखा कितना बड़ा होगा ?

केता ताणु सुआलिहु रूपु
केती दाति जाणै कोणु कूतु।

प्रभु ने संसार को कितना बल और कितनी सुंदरता दी है। उसकी दी हुई कितनी ही अनगिनत वस्तुएं हैं। इन सबको कौन गिन सकता है। जिस प्रकार परमात्मा अनंत है , उसी प्रकार उसकी सृष्टि भी अपार और अनंत है।

कीता पसाउ एको कवाउ

तिस ते होए लख दरीआउ।

उसके एक ही शब्द से सृष्टि का विस्तार हो गया अर्थात उससे सृष्टि का निर्माण और विकास अनायास हो गया। उसी की आज्ञा से लाखों नदियां बह निकली।

कुदरति कवण कहा विचारु
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार
तू सदा सलामति निरंकार।।16।।

उसकी कुदरत का हम क्या विचार करें। हम तो उसके कार्य देख–देखकर विस्मय से स्वयं को उस पर न्यौच्छावर करने लगते हैं। अतः हे परमात्मा! जो कार्य तुम्हें अच्छा लगता है वही भला है। हे रूपरेख से न्यारे प्रभु! तू ही सदा स्थिर है।

असंख जप असंख भाउ
असंख पूजा असंख तप ताउ।

परमात्मा के नाना नाम–रूप हैं, इसलिए उसके असंख्य प्रकार के जप तथा अनगिनत भाव हैं असंख्य ढंगों की पूजा है और असंख्य प्रकार के ही तप साधे जा रहे हैं अर्थात तन,मन को हठ करके तपाया जा रहा है।

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ
असंख जोग मनि रहहि उदास।

असंख्य ग्रंथ हैं, जिनमें परमात्मा के गुणों का बखान किया गया है। वेद आदि ग्रंथों का पाठ करने वाले भी असंख्य मुख हैं। असंख्य मनुष्य ही योग धारण करने वाले उदासीन हैं। असंख्य नाम–रूप वाले परमात्मा को पाने के मार्ग भी असंख्य हैं।

असंख भगत गुण गिआन वीचार
असंख सती असंख दातार।
असंख सूर मुह भख सार
असंख मोनि लिव लाइ तार।।

असंख्य भक्त हैं जो अपने विवेकानुसार उस परमात्मा के गुणों का गान करते हैं। असंख्य सती और असंख्य दानशील हैं, जो अपना सर्वस्व दान कर देते हैं। दधीची जैसे भी दानी हुए हैं, जिन्होंने अपने शरीर तक का दान कर दिया। असंख्य सूरमा हैं , जो चेहरे पर तलवार का प्रहार सहते

हैं अर्थात पीठ नहीं दिखाते। असंख्य मौनधारी हैं जो अपनी समस्त इंद्रियों को उनके विषयों से समेटकर मन को एकाग्र करके समाधिस्थ होते हैं।

कुदरति कवण कही वीचारु
वारिआ न जावा एक वार।
जो तुधु भावै साई भली कार
तू सदा सलामति निरंकार।।17।।

उसकी कुदरत का हम क्या विचार करें। हम तो उसके कार्य देख–देखकर विस्मय से स्वयं को उस पर न्यौच्छावर करने लगते हैं। अतः हे परमात्मा! जो कार्य तुम्हें अच्छा लगता है वही भला है। हे रूपरेख से न्यारे प्रभु! तू ही सदा स्थिर है।

असंख मूरख अंध घोर
असंख चोर हरामखोर।
असंख अमर करि जाहि जोर।।

असंख्य ही मूर्ख हैं, जिनकी अज्ञानता की कोई सीमा नहीं है। असंख्य चोर और दूसरों का हक मारने वाले हैं। असंख्य बलात् ही अमर हो जाना चाहते हैं।

असंख गलवढ हतिआ कमाहि
असंख पापी पापु करि जाहि।

निर्दोषों का गला काटकर हत्या करने वालों की भी संसार में कमी नहीं है। अनेक तरह के पाप करने वाले भी असंख्य प्राणी हैं।

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि
असंख मलेछ मलु भखि खाहि।

असंख्य ही झूठ का प्रचार करने वाले हैं, जो झूठ पर झूठ बोलते हैं। असंख्य ही म्लेच्छ हैं, जो अभक्ष्य का भक्षण करते हैं।

असंख निंदक सिरि करहि भारु।।
नानकु नीचु कहै वीचारु।
वारिआ न जावा एक वार।।

असंख्य निंदक हैं , जो दूसरों की निंदा करके अपने पापों का भार बढ़ा लेते हैं। नीच नानक(यहां गुरु नानक स्वयं को नीच लिखना विनम्रता दर्शाता है। भक्त–संतों की यही तो बढ़ाई है कि उन्होंने परमात्मा के

अलावा किसी दूसरे का बड़प्पन नहीं स्वीकारा। सच्चे मायने में सिर्फ वही पवित्र है, वही महान् है।) अपने विचार से (स्वयं को तुच्छ मानते हुए) कहता है कि मैं एक बार भी प्रभु पर समर्पित होने योग्य नहीं हूं।

जो तुधु भावै साई भली कार
तू सदा सलामति निरंकार।।18।।

हे निराकार! तुझे रिझा सकने वाले कार्य ही भले हैं। तू सदैव ही स्थिर है।

असंख नाव असंख थाव
अगंम अगंम असंख लोअ।

उस परम पुरुष परमात्मा के असंख्य नाम और स्थान हैं। उसके असंख्य लोक हैं, जिन तक हमारी पहुंच नहीं हो सकती। उन लोको ं में भी उसका वास है।

असंख कहहि सिरि भारु होइ।
अखरी नामु अखरी सालाह।।
अखरी गिआनु गीत गुण गाह।

असंख्य कहने से भी सिर पर भार होता है। उसकी वस्तुओं का समुदाय हमारी गणना से भी परे है। फिर भी अक्षरों के माध्यम से ही परमात्मा का नाम जाना जाता है। अक्षरों से ही उसकी स्तुति की जाती है। अक्षरों द्वारा ही उसका ज्ञान होता है कि वह कैसा है, उसके गुणों का गान होता है और उसके गुणों पर विचार किया जाता है।

अखरी लिखणु बोलणु बाणि।।
अखरा सिरि संजोगु वखाणि।

अक्षरों के माध्यम से ही वाणी को लिखना और बोलना संभव है। अक्षरों के सिर यानी आधार पर ही परमात्मा से अपने बंधन का बखान किया जाता है। इसलिए शास्त्रो ं ने शब्द को प्रमाण माना है।

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि।।
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि।

जिसने यह लिखा है अर्थात संयोग बनाए हैं, वह अक्षरों के अधीन नहीं है। उस पर हिसाब रखने वाला कोई नहीं है। वह जीव के कर्मो ं के अनुसार जो–जो आज्ञा करता है, उनका हिसाब लिखा जाता है। इस प्रकार जीव अपने कर्मों के अनुसार ही फल पाता है।

जेता कीता तेता नाउ।।

विणु नावै नाही को थाउ।

परमात्मा ने जो सृष्टि बनाई है, वह सारी की सारी नाम–रूप वाली है। कोई जगह, कोई स्थान,कोई कोना या कोई दिशा नाम से वंचित नहीं है। सारा विस्तार नाम और रूप का ह ै। प्रत्येक नाम और प्रत्येक रूप मे ं उस परमात्मा का ही निवास है। सब उसी के रूप हैं।

कुदरति कवण कही वीचारु

वारिआ न जावा एक वार।

जो तुधु भावै साई भली कार

तू सदा सलामति निरंकार।।17।।

परमात्मा की प्रकृति को परखने का सामर्थ्य किसी में नहीं है। उस पर कौन विचार कर सकता है ? जो उसे भाए, वही उत्तम है। वह सदैव रहने वाला एवं अनश्वर है।

भरीऐ हथु पैर तनु देह।

पाणी धोते उतरसु खेह।।

यदि हाथ, पैर या शरीर पर मिट्टी लग जाए तो वह पानी से धुल जाती है।

मूत पलीती कपड़ होइ।

दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ।।

यदि मूत्रादि के स्पर्श से कपड़े गदें हो जाएं तो उन्हं ेसाबुन लगाकर धोया जा सकता है।

भरीऐ मति पापा कै संगि।

ओहु धोपै नावै कै रंगि।।

किंतु यदि हमारा अंतःकरण पापों से मलिन हो जाए तो उसकी अशुद्धि का एकमात्र उपाय नाम जपना है।

पुंनी पापी आखणु नाहि।

करि करिकरणा लिखि लै जाहु।।

आपै बीजि अरपे ही खाहु।

नाने हुकमी आवहु जाहु।।

पुण्यात्मा या पापात्मा केवल कहने की बात नहीं है। सभी अपने कर्मों का लेखा साथ ले जाते हैं। जो आप स्वयं बोते हैं, वही खाना पड़ता है

अर्थात जैसी करनी ,वैसी भरनी। हे नानक! उस अकालपुरुष की आज्ञानुसार ही सारा आवागमन होता है।

तीरथु तपु दइआ दतु दानु।

जे को पावै तिल का मानु।।

कोई व्यक्ति तपस्या, दान–पुण्य आदि करके जो सम्मान पाता है, वह तिल से अधिक नहीं है अर्थात कुछ नहीं है।

सुणिया मंनिआ मनि कीता भाउ।

अंतरगति तीरथि मलि नाउ।।

केवल वही जीव परमात्मा का भेद पा सकते हैं जो उसके नाम–रूप का श्रवण, मनन और निदिध्यासन करते हैं। वे अंतर्मुख होकर नाम के सच्चे तीर्थ में नहाते और निर्मल होते हैं।

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ।

विणु गुण कीते भगति न होइ।।

हे प्रभु! सभी गुण तेरे में हैं, मुझमें कोई गुण नहीं है। बिना गुणों के कोई परमात्मा की भक्ति कैसे कर सकता है ?

सुअसति आथि बाणी बरमाउ।

सति सुहाणु सदा मनि चाउ।।

कल्याण स्वरूप सविशेष ईश्वर ने एक से अनेक होने का संकल्प वाणी से उच्चारण किया , तभी सारा प्रपंच अस्तित्व में आया अर्थात सृष्टि की रचना हुई। वास्तव में परमात्मा स्वयं ही सदैव सत्, चित् और आनंद रूप है।

कवणु सु वेला वखतु कवणु।

कवण थिति कवणु वारु।।

कवणि सि रुती माहु कवणु।

जितु होआ आकारु।।

परमात्मा ने जगत की संरचना कब की, तब क्या समय था, कौन सी तारीख और कौनसा दिन था तथा कौन सा महिना था – यह सब कौन जानता है ? कोई नहीं जानता, क्योंकि तब अकाल पुरुष के अलावा कोई दूसरा था ही नहीं।

वेल न पाईआ पंडती।

जि होवै लेखु पुराणु।।

वखतु न पाइओ कादीआ।
जि लिखनि लेखु कुराणु।।

उस काल का भेद बड़े–बड़े पण्डित और विद्वान भी नहीं जान पाए। यदि जाना होता तो पुराणादि ग्रंथों में इनका उल्लेख अवश्य होता। काजी या मुल्लाओं को भी यह ज्ञात नहीं है ,अन्यथा उन्होंने कुरान आदि में इसके बारे में अवश्य लिखा होता।

थिति वारु न जोगी जाणै।
रुति माहु ना कोई।।
जा करता सिरठी कउ साजे।
आपे जाणै सोई।।

तिथि–वार का रहस्य तो योगी भी नहीं जानते। ऋतु–महिनों को भी कोई नहीं जानता। यह भेद तो सृष्टिकर्ता ही जानता है।

किव करि आखा किव सालाहि।
किउ वरनी किव जाण।।
नानक आखणि सभु को आखै।
इकदू इकु सिआणा।।

उसकी करनी को क्या कहकर पुकारुं, क्या उपमा दूं कैसे वर्णन करुं और कैसे समझूं हे नानक! सभी परमात्मा के बारे में कहते तो हैं, परतुं यथार्थ कोई नहीं जानता।

वडा साहिबु वडी नाई।
कीता जा का होवै।।
नानक जे को आपौ जाणै।
अगै गइआ न सोहै।।21।।

वह बड़ा है, उसका नाम भी बड़ा है। उसके करने से ही सबकुछ होता है। हे नानक! जो मनुष्य खुद को कर्ता मानता है, वह प्रभु की ओर कभी नहीं जाता।

पाताला पाताल आगासा आगास।।

गुरु महाराज आगे कहते हैं– पातालों के आगे पाताल और आकाशों के आगे भी लाखों आकाश हैं। संसार को जानने का अहंकार करने वाला

ससांरिक वस्तुओं के बारे में कितना जानता है, कितना जान सकता है ?

ओड़क ओड़क भालि थके
वेद कहनि इक वात
सहस अठारह कहनि कतेबा
असुलू इकु धातु।।

सृष्टि का रहस्य खोजने वाले ढढूं–ढूंढ़कर थक गए, परतंु सृष्टि रचना का अंत किसी ने नहीं पाया। वेद भी यही बात कहते हैं।
कुछ धर्मग्रंथों में अठारह हजार संसार लिखे हैं और कोई इन्हें अनंत कहता है। वस्तुतः इन संसार के बारे में कोई भी ठीक प्रकार से नहीं जानता।

लेखा होइ त लिखिऐ
लेखै होइ विणासु।।
नानक वडा आखीऐ
आपै जाणु आपु।।22।।

सृष्टि का हिसाब करना असंभव है। जीव के लिए यह संभव नहीं है कि वह इसके रहस्यों को पूरी तरह से जान पाए। हिसाब करने और रहस्य जानने का प्रयास करने वाला स्वयं ही मिट जाता है।
बात बड़ी साफ है। यह सृष्टि जीव के देह धरने और त्यागने से ज्यादा स्थायी है। इसलिए जानने वाला जानता–जानता मिट जाता है, तब भी सृष्टि के रहस्यो ं को परू ी तरह से नहीं जान पाता। अतः गुरु महाराज कहते हैं कि उस परमात्मा का गुणगान करो। क्योंकि अपने रहस्यों को जानने वाला वह स्वयं आप ही है।

सालाही सालाहि एती
सुरति न पाईआ।
नदीआ अतै वाह पावहि
समुंदि न जाणीअहि।।

भक्त परमात्मा का गुणगान करके उसका दुर्लभ ज्ञान पा सकते हैं, मगर उसकी थाह नहीं। ऐसे भक्त उन नदी–नालों जैसे हैं जो समुद्र में तो गिर जाते हैं, परंतु उसकी गहराई और उसके विस्तार को नहीं जान

पाते।

समुंद साह सुलतान गिरहा
सेती मालु धनु।।
कीड़ी तुलि न होवनी जे
तिसु मपहु न वीसरहि।।23।।

धन के पहाड़ सरीखे देशों का मालिक उस चींटी के बराबर भी नहीं है, जिसे परमात्मा ने भुलाया भी नहीं है। कीमत उसकी है जिसे वह भुलाता नहीं।

अंतु न सिफती कहणि न अंतु।
अंतु न करणै देणि न अंतु।।
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु।
अंतु न जापै किआ मनि मंतु।।

न तो उसके गुणों का अंत है और न ही उन गुणों के वर्णन का अंत है। उसके कार्यों का भी कोई अंत नहीं है और न उसके देने का कोई अंत है अर्थात वह जिन–जिन वस्तुओं की रचना करता है, उनका भी कोई अंत नहीं है। उनमें से जो हमें मिलती हैं उनका भी अंत नहीं है। उसकी रचना में देखने और सुनने वालों का भी कोई अंत नहीं है। इसका भी कोई अंत नहीं मिलता कि उसके कार्य करने के तहत उसके मन में क्या मंतव्य होता है। यदि कोई जीव उस परमात्मा का अंत पाना चाहे , जो पा नहीं सकता।

अंतु न सिफती कहणि न अंतु।
अंतु न करणै देणि न अंतु।।
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु।
अंतु न जापै किआ मनि मंतु।।

न तो उसके गुणों का अंत है और न ही उन गुणों के वर्णन का अंत है। उसके कार्यों का भी कोई अंत नहीं है और न उसके देने का कोई अंत है अथौत वह जिन जिन वस्तुओं की रचना करता है, उनका भी कोई अंत नहीं है। उनमें से जो हमें मिलती हैं उनका भी अंत नहीं है। उसकी रचना में देखने और सुनने वालों का भी कोई अंत नहीं है। इसका भी कोई अंत नहीं मिलता कि उसके कार्य करने के तहत उसके

मन में क्या मंतव्य होता है। यदि कोई जीव उस परमात्मा का अंत पाना चाहे , जो पा नहीं सकता।

वडा साहिबु ऊचा थाउ

ऊचे उपरि ऊचा नाउ।

बड़प्पन ही उसका मूल गुण है। उसका वास भी ऊंचा है। उसका नाम तो उस ऊंचे से भी ऊंचा है।

एवडु ऊचा होवै कोइ।

तिस ऊचे कउ जाणै सोइ।।

जो कोई उसके जसा ऊचां होता है, वही उसके रहस्यो ं को जान समझ सकता है। या तो वह स्वयं अपनी ऊंचाइयों को जानता है या फिर उसे जानने वाला गुरु है।

जेवडु आपि जाणै आपि आपि।

नानक नदरी करमी दाति।।24।।

कितना बड़ा है परमात्मा – यह चह स्वयं ही जानता है, दूसरा कोई जान ही नहीं सकता। हे नानक! हम तो सिर्फ इतना समझते हैं कि जो पदार्थ हमें प्राप्त होते हैं, वे उसी की कृपा के फल हैं।

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ।

वडा दाता तिलु न तमाइ।।

परमात्मा की दया का कोई पार नहीं है। उसे लिखा नहीं जा सकता। वह बड़ा है और उसे तिल भर भी लोभ नहीं। परमात्मा यह विचारे बिना मनुष्य को देता जाता है कि वह उसे गंवा देगा या उसके प्रति अकृतज्ञ होगा।

केते मंगहि जोध अपार।

केतिआ गणत नही विचारु।।

केते खपि तुटहि वेकार।।

कितने ही योद्धाओ ं को उसके आगे हाथ पसारने पड़ते हैं। ऐसे मांगने वाले असंख्य हैं। उनकी गिनती संभव नहीं। कितने ही मनुष्य विभिन्न पदार्थ भोग–भोग कर स्वयं ही बेकार बना लेते हैं। लेकिन वह अपनी दया की वर्षा बिना किसी अपेक्षा के करता रहता है।

केते लै लै मुकरु पाहि।

केते मूरख खाही खाहि।।

अनेक लोग वस्तुएं लेकर मुकर जाते हैं कि हमें परमात्मा से कुछ मिला नहीं। ऐसे मूर्ख व्यक्ति सिर्फ वस्तुओं को भोगते रहते हैं। उन्हें मात्र वस्तुओं के मिलने और भोगने से मतलब होता है। वे उसे देने वाले परमात्मा का अस्तित्व ही नकार देते हैं। वे स्वयं को उनका कारण मानते हैं।

केतिआ दूख भूख सद मार।
एहि भि दाति तेरी दातार।।

कितने लोगों को सदा दुख और भूख की मार पड़ती है। वे उसे दाता की रहमत मानते हैं। वे कहते हैं– हे दाता! यह दुख और भूखादि भी तो तेरी ही देन है। जब तेरी मरजी के बिना कुछ नहीं हो सकता, तो दुख में भी तेरी ही मेहर छिपी होती है। ऐसे में मैं दुख में भी क्यों न सुखी होउं।

बंदि खलासी भाणै होइ।
होरु आखि न सकै कोइ।।
जे को खाइकु आखणि पाइ।
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ।।

बंधन या छुटकारा भी तुम्हारी आज्ञा से ही मिलता है। इसमें कोई दूसरा कुछ कर नहीं सकता । यदि कोई इस विषय में किसी तरह से कुछ कहने का प्रयत्न करता है तो इस अनुचित कार्य के बदले उसे मुंह की खानी पड़ती है।

आपे जाणै आपे देइ।
आखहि सि भि केई केइ।।

सर्वज्ञ परमात्मा स्वयं हमारी आवश्यकताएं जान लेता है और स्वयं ही उन्हें पूरा करता है। यह बात भी कोई–कोई ही कहता है अर्थात ऐसे कृतज्ञ कम होते हैं। ज्यादातर लोग तो परमात्मा पर यह आरोप लगाते रहते हैं कि हमने उसका क्या बिगाड़ा था।

जिस नो बखसे सिफति सालाह।
नानक पातिसाही पातिसाहु।।25।।

जिस मनुष्य को परमात्मा की कृपा से उसके नाम–जप एवं श्रवण का उपहार मिला हो, हे नानक! वह बादशाहों का भी बादशाह है।

अमुल गुण अमुल व्यापार।
अमुल वापारीए अमुल भंडार।

परमात्मा के गुण अनमोल हैं। उनका आचरण उससे अधिक अनमोल है। अनमाले है इन गुणों को जीवन में अपनाने वाला। परमात्मा के पास गुणो ं का भंडार है।

अमुल आवहि अमुल लै जाहि।
अमुल भाइ अमुला समाहि।।

अनमोल हैं वे लोग, जो गुणों के लिए आते हैं और उन्हें ले जाते हैं अर्थात गुण ग्राहक भी अनमोल हैं। वे मनुष्य भी अनमोल हैं, जो सद् आचरण निभाते हैं।

अमुलु धरमु अमुलु दीवाणु।
अमुलु तुल अमुलु परवाणु।।
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु।
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु।।

परमात्मा का नियम अनमोल है और अनमोल है वह न्यायालय , जहां ये नियम व्यवहार मे ं आते हैं। वे तालै और मानदण्ड अनमोल हैं, जिससे हमारे कर्म तौले जाते हैं। उसका क्षमा देना भी अनमोल है। अनमोल है उसका स्वीकार कर लेना भी। उसका दया का कर्म भी अनमोल है और अनमोल है उसकी आज्ञा। परमात्मा का प्रत्येक पहलू अनमोल है, जिसका वर्णन संभव नहीं है। परमात्मा, परमात्मा की सृष्टि और उसके नियम इनमें से किसी को भी बुद्धि के तराजू पर नहीं तौला जा सकता।

अमुलो अमुलु आखिया न जाइ।
आखि आखि रहे लिव लाइ।।

वह अनमोल ही अनमोल है। अकथनीय है वह। अनेक जीव उसकी अमूल्यता का गान करते करते उसी में लीन हो गए।

आखहि वेद पाठ पुराण।
आखहि पड़े करहि वखिआण।।

वेद और पुराण उसी के बारें में कहते हैं। विद्वान व्यक्ति धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या करके उसी के गुणों के बारे में समझाते हैं।

आखहि बरमे आखहि इंद।
आखहि गोपी तै गोविंद।।

आखहि ईसर आखहि सिध।
आखहि केते कीते बुध।।

ब्रह्मा, इंद्र, गोपियां, योगेश्वर, सिद्ध और बुद्ध भी उसके विषय में कहते हैं।

आखहि दानव आखहि देव।
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव।।

देवता एवं दैत्य भी उसके बारे मे ं बताते हैं। देवता, मनुष्य और उसमें रमण करने वाले मुनिजन भी उसी के बारे में तरह–तरह के प्रवचन करते हैं।

केते आखहि आखणि पाहि।
केते कहि कहि उठि उठि जाहि।।

कई कह रहे हैं, कई कहने लगे हैं, और कई धर्म कहते–कहते उठते जाते हैं अर्थात उसके बारे में कहने का सिलसिला न जाने कब से चला आ रहा है और चलता ही रहेगा।

एते कीते होरि करेहि।
ता आखि न सकहि केई केइ।।

ये जितने प्रकार की सृष्टि उसने बनाई है, इतनी ही और बनाए तो भी कोई कुछ वर्णन नहीं कर सकेगा। संसारी से उसका वर्णन हो ही नहीं सकता।

जेवडु भावै तेवडु होइ।
नानक जाणै साचा सोइ।।

परमात्मा का बड़प्पन उसकी ईच्छा से घटता–बढ़ता है। हे नानक! वह परमात्मा अपना पारखी स्वयं ही है।

जे को आखै बोलुविगाड़।
ता लिखिऐ सिरि गावारा गावारु।।

यदि कोई अंहकारी या बड़बोला जीव यह कहने लगे कि वह इतना बड़ा है तो उसे गंवार से भी गंवार अर्थात महामूर्ख समझना चाहिए। परमात्मा सरीखा सिर्फ परमात्मा ही है, और कोई नहीं। इसलिए कोई दूसरा उसका पारखी कैसे हो सकता है।

सो दरु केहा सो घरु केहा।
जितु बहि सरब समाले।।

हे प्रभु! तेरा वह घर और उस घर का द्वार कैसा होगा, जिसमें बैठकर तू सारे संसार की सार लेता है। सबकी संभाल करता है।

वाजे नाद अनेक।

असंखा केते वावणहारे।।

केते राग परी सिउ।

कहीअनि केते गावणहारे।।

वहां कई प्रकार के असंख्य वाद्य हैं। उनको बजाने वाले भी तरह–तरह के अनेक लोग हैं। वहां कितने ही राग हैं तथा कितने ही उनका गायन करने वाले हैं। सभी अपनी–अपनी तरह से गान कर रहे हैं।

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु

गावै रीजा धरमु दुआरे।।

जल, वायु और अग्नि तीनों तेरा गायन कर रहे हैं। धर्मराज स्वयं तेरे द्वार पर गा रहे हैं।

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि

लिखि लिखि धरमु वीचारे।।

कर्म लिखने वाले तथा धर्मराज द्वारा उन्हें गति दिलाने वाले चित्रगुप्त भी तेरा ही गान करते हैं।

गावहि ईसरु बरमा देवी

सोहनि सदा सवारे।।

तुझ द्वारा निर्मित शिव, ब्रह्मा और देवी भगवती भी तेरे ही गुणों को गा रहे हैं।

गावहि इंद इंदासणि

बैठे देवतिआ दरि नाले।।

इंद्रासन पर बैठे इंद्र भी अपने देवताओं सहित तेरे दर पर गा रहे हैं।

गावहि सिध समाधी अंदरि

गावनि साध विचारे।।

समाधिस्थ सिद्ध और साधु–योगी सब तेरी ही शोभा का गान कर रहे हैं।

गावनि जती सती संतोखी

गावहि वीर करारे।

यति, सती, दानी, संतोषी और शूरवीर भी तेरी ही गायन कर रहे हैं।

गावनि पंडित पड़नि रखीसर
जुगु जुगु वेदा नाले।।

बड़े–बड़े ऋषि तथा वेदाध्ययन करने वाले पंडित भी तेरा ही गुणगान कर रहे हैं। ऋषियों ने मंत्रों का साक्षात्कार करके तेरे ही गुणों को गाया है। उनका पाठ करके विद्वान पंडित भी तेरा ही गुणानुवाद कर रहे हैं।

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि
सुरगा मछ पइआले।।

मन को मोह लेने वाली स्वर्गलोक, मातृलोक एवं पाताललोक की सुंदरियां भी तेरे गुण गाती हैं अर्थात तेरी ही सुंदरता को प्रकट करती है।

गावनि रतन उपाए तेरे
अठसठि तीरथ नाले।।

तेरे ही द्वारा उत्पन्न किए गए रत्न 68 तीर्थों सहित तुझे ही गा रहे हैं।

गावहि जोध महाबल सूरा
गावहि खाणी चारे।।
गावहि खंड मंडल वरभंडा
करि करि रखे धारे।।

महाबली योद्धा और शूर तेरा ही गान करते हैं। चारों सृष्टियां अंडज,जेरज, स्वेदज, उद्भिज तेरा ही गुणगान कर रही है। सारा ब्रह्मांड और उसके सारे भू–भाग अथवा देश–लोक जो भी तूने बना रखें हैं, तेरे ही गुण एवं यश का गायन करते हैं। हे प्रभु! सृष्टि का एक–एक कण अपनी दिव्यता द्वारा तेरा ही तो गुणगान कर रही है।

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु
भावनि रते तेरे भगत रसाले।।

तेरे गुणों का बखान वही करते हैं, जो तुझे प्रिय हैं और जो तेरे रसिक होकर भक्तिरंग या तेरे प्रेम में सदैव रंगे रहते हैं।

होरि केते गावनि
से मै चिति न आवनि
नानकु किआ वीचारे।।

और भी ऐसे कितने लोग हैं जो मुझे याद नहीं आ रहे, वे भी तेरे गुण

गाते हैं। नानक उनके बारे में और क्या कहे ?

सोई सोई सदा सचु साहिबु
साचा साची नाई।।
है भी होसी जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई।।

वह परम पिता परमात्मा ही सत्य है। वह सदा रहने वाला है। वह पहले भी था, वही अब है,आगे भी होगा, चाहे संसार नष्ट हो जाए। परंतु वह सदा स्थिर रहेगा। वह न तो कभी मरता है और न ही जन्मता है। जिसने इस संसार की रचना की, वही सत्य है और कुछ नहीं।

रंगी रंगी भाती करि करि
जिनसी माइआ जिनि उपाई।।
करि करि वेखै कीता आपणा
जिव तिस दी वडिआई।।

जिसने भांति–भांति की रंग–बिरंगी वस्तुओं की रचना की है, वही अपने द्वारा बनाई गई वस्तुओं को स्वयं संभालता है। वह बिना किसी पक्षपात के सभी जीवों की रक्षा करता है।

जो तिसु भावै सोई करसी
हुकमु न करणा जाई।।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु
नानक रहणु रजाई।।27।।

जो कुछ उसे भाता है, वह वही करता है। उस पर किसी की आज्ञा नहीं चलती। वह बादशाहों का बादशाह है। हे नानक! हमें तो उसकी इच्छानुसार ही रहना होता है।

मुंदा संतोखु सरमु पमु झोली
धिआन की करहि बिभूति।।

संतोष की मुद्राएं पहनकर तथा परिश्रम का खप्पर और झोली बनाकर

प्रभु को सदा स्मरण रखने की विभूति लगा अर्थात कानों में छेद करके कुण्डल पहनने की अपेक्षा अपनी बढ़ती इच्छाओं का दमन करके धैर्य एवं संतोष में रहो। दर–दर झोली फैलाकर मांगने की जगह परिश्रम से कमाकर नेकी की कमाई खाओ।

लोग शरीर पर राख इस कारणवश लगाते हैं कि मन शरीर को संवारने की अपेक्षा अधिक उन्नति की ओर अग्रसर हो। अतएव यह तभी सार्थक होगा, जब परमात्मा में ध्यान लगाया जाए।

गुरु नानक देव ने यह सारी बातें नाथ संप्रदाय के अनुयायियों के लिए कही हैं।

खिंथा कालु कुआरी काइआ
जुगति डंडा परतीति।।

योगी अथवा साधु लोग एक खुला चोला–सा पहनते हैं, जिसे वे कफनी कहते हैं। यह भेष सदैव मृत्यु की याद दिलाता है। लेकिन कफनी पहनने वालों के मन में भोगों की कामना बनी रहती है। भोगों में सुख की चाह करने वाले लोग मरकर भी नहीं मरते। यदि मन में मृत्यु की याद रहे तो कफनी पहनने की जरुरत ही नहीं है।

मन को निर्मल करो अर्थात ब्रह्मचर्य का पालन करो और हाथ में निश्चयरुपी डंडे की युक्ति अपनाओ। योगी होने या कफनी पहनने के भाव का दिखावा न करो। हृदय में केवल परमात्मा को निश्चयपूर्वक धारण करो। भेष को नहीं, हृदय को बदलो।

आई पंथी सगल जमाती
मनि जीतै जगु जीतु।।

योगियाके के बारह समुदायों में से एक आई पंथ है। इस पंथ को अपनाने वाले सभी मनुष्यों को हमजमाअती कहते हैं। संसार से उचाट होकर पंथ बनाने की अपेक्षा सभी से मिलकर प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। मन की बढ़ती हुई तृष्णाओं पर अधिकार पाना ही विश्व–विजय के समान है।

आदेसु तिसै आदेसु।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु ऐको वेसु।।28।।

हे योगी! उसी को प्रणाम कर जो आदि है, अनादि है, पवित्र है, अनाहत है, युगों–युगों से एक ही वेश में है और सदा ही एक रुप रहता है।

भुगति गिआनु दइया भंडारणि
घटि घटि वाजहि नाद।।

ज्ञान का भोजन करो। इस भोजन को परोसने वाली भंडारिन दया है। दया का भंडार बनो अर्थात लोभ, मोह, अंहकार आदि भूखों को नष्ट कर परम ज्ञान नाम भोजन से तृप्त हसे जाओं। इस भोजन के समय घट–घट में नाद प्रभु नाम की ध्वनी बजती रहे।

आपि नाथु नाथी सभ जा की
रिधि सिधि अवरा साद।।

जिससे सारी सृष्टि जुड़ी है, वही परमात्मा नाथ है। ऋद्धियों एवं सिद्धियों का तो कुछ अलग ही स्वाद है। वास्तव में इनका धर्म से कोई संबंध नहीं है। यह भी माया का ही एक रुप है। जो इन ऋद्धियों एवं सिद्धियों में उलझा रहता है, वह धर्म तथा परमात्मा से विमुख हो जाता है।

संजोगु विजोगु दुइ कार
चलावहि लेसो आवहि भाग।।

मिलन और वियोग–ये दानों ही संसार का कार्य चला रहे हैं। जो कुछ मिलता है, इन्हीं ाि्द्धातों के अनुसार मिलता है। मनुष्य सहित सभी जीव परमात्मा की आज्ञा में ही रत रहते हैं। जब तक जीव यह समझता रहता है, तब तक वह उसके साथ जुड़ा रहता है। जब वह मैं के वशीभूत होकर चलता है, तो वह परमात्मा से बिछुड़ जाता है। परंतु यह नहीं कि एक बार के वियोग के बाद वह फिर न मिल पाए। उसने हमारे अंतस में एक ऐसी ज्योति भी प्रदान की है, जिसके प्रकाश से हम भला बुरा देख –समझ सकते हैं। इस प्रकार हम कुमार्ग छोड़ सद्‌मार्ग पर चलकर फिर उससे मिल जाते हैं। यह भी उसकी आज्ञा ही होता है।

आदेसु तिसै आदेसु।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु।।29।।

अतः हे योगी! उसी को प्रणाम कर जो आदि है, आनादि है, पवित्र है, अनाहत है, युगों–युगों से एक ही वेश में है और सदा एक ही रुप रहता है। वही सच है, शेष उसी का पसारा है।

एका माई जुगति विआई
तिनि चेले परवाणु।।
इकु संसारी इकु भंडारी
इकु लाए दीबाणु।।

ब्रह्म और माया के संयोग से माया के तीन पुत्र हुए–एक संसार को

रचने वाला, दूसरा भण्डारी अर्थात पालन करने वाला और तीसरा संहार करने के लिए कर्मों की अदालत लगाने वाला अर्थात ब्रह्मा,विष्णु और महेश।

जिसु तिसु भावै तिवै चलावै
जिव होवै फुरमाणु।।

लेकिन वास्तव में प्रभु स्वयं जैसा चाहता है, वैसा ही होता है। उसकी आज्ञा ही संसार को चलाने वाली है, दूसरा कसेई नहीं। ऐसा कभी वह प्रत्यक्ष रुप से करता है, तो कभी किसी को माध्यम बनाकर। प्रकृति के कार्यों में स्वयं जुड़ता है और व्यक्तिगत रुप से वही सबके मन में तरह–तरह के स्फुरण पैदा करता है।

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै
बहुता एहु विडाणु।।

कितने आश्चर्य की बात है कि प्रभु तो सबको सर्वत्र देखता है, परंतु लोग उसे नहीं देख पाते है। यही बात विशेष रूप से आश्चर्य में डालती है। शायद इसी कारणवश सांसारिक जीव शिव–शक्ति तथा ब्रह्मा–विशु–महेश को ही सबकुछ मानकर उस परमसत्ता को भूल बैठे हैं।

आसणु लोइ लोइ भंडार।
जो किछु पाइया सु एका वार।।

उसने लोक–लोक में अपना आसन जमाया हुआ है। वह सृष्टि में हर जगह विद्यमान है। सभी जगह उसके भण्डार हैं। परमात्मा ने उन भण्डारों में एक ही बार सबकुछ डाला है, लेकिन वह कभी समाप्त होने वाला नहीं है। वह व जाने कब से चला आ रहा है, और न जाने कब तक चलता रहेगा। जैसा भंडारी असीम और अनंत है वैसा ही उसका भंडार भी है, जो खर्च हाने पर भी भरा का भरा रहता है।

करि करि वेखै सिरजणहारु।
नानक सचे की साची कार।।

वह स्वयं सृजन कर–करके उनको देखता है। उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। वह कुम्हार की तरह बर्तनों को नहीं बनाता, जिसे मिट्टी और बाकी चीजें चाहिए होती हैं। उसने किसी की सहायता के बिना स्वयं सृष्टि को रचा। इस मायने में उसकी सृष्टि भी उस जैसी ही सच्ची होगी। इसलिए हे नानक! उसके कार्य सत्य और सत्य रहने वाले होते हैं।

आदेसु तिसै आदेसु।।

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जुगु जुगु एको वेसु।।31।।

अतः हे योगी! उसी को प्रणाम कर जो आदि है, आनादि है, पवित्र है, अनाहत है, युगों–युगों से एक ही वेश में है और सदा एक ही रुप रहता है। वही सच है, शेष उसी का पसारा है।

इक दू जीभौ लख होहि

लक्ष होवहि लख वीस।।

लखु लखु गेड़ा आखीअहि

एकु नामु जगदीस।।

हमारी एक जिह्वा लाख या उसकी बीस गुना हो जाए और उनसे लाख–लाख जप करके हम प्रभु को पा लेंगें– यह कोरी बकवास है।

एतु राहि पति पवड़ीआ

चड़ीएं होइ इकीस।।

सुणि गला आकास की

कीटा आई रीस।।

नाम स्मरण उससे मिलने की सीढ़ी है। किंतु उस सीढ़ी पर जीव तभी चढ़ पाता है, जब उसकी कृपा हो, जब उसका सहारा मिले। यू ंतो परमात्मा की ऊंची बातें सुन–सुनकर कीड़े अथौत नीच जीव को भी उससे मिलने का चाव हो जाता है।

नानक नदरी पाईऐ

कूड़ी कूड़ै ठीस।।32।।

हे नानक! उसकी कृपा से ही वह हमको मिलता है, बाकी सब बातें झूठी हैं।

आखणि जोरु चुपै नह जोरु।

जोरु न मंगणि देणि न जोरु।।

किसी के पास बोलने या चुप रहने की अपनीकोई सामर्थ्य नहीं है। मांगने और देने के लिए भीकिसी में कोई सामर्थ्य नहीं है।

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु।

जोरु न राजि मालि मनि सोरु।।

जीने और मरने की भी सामर्थ्य मनुष्य में नहीं है। राज्य त्था धन की

प्राप्ति या विनाश की शक्ति भी जीव में नहीं है। सभी कुछ ईश्वर की कृपा से मिलता या बिछुड़ता है। उसकी इच्छा के बिना कभी कुछ नहीं होता है।

जोरु न सुरजी गिआनि वीचारि।

जोरु न जुगती छुटै संसारु।।

ज्ञान और विवेकादि पाने सा उनमें बने रहने की भी निजी सामर्थ्य किसी मे नहीं है। कोई लाख कोशिश करे, फिर भी वह ज्ञान के मार्ग पर नहीं चल पाता। यदि चल भी ले तो उस पर बने रहना संभव नहीं होता। लेकिन उसकी कृपा से सबकुछ अनायास हो जाता है। इसके अलावा किसी में इस संसार से मोक्ष पाने की सामर्थ्य नहीं है।

जिसु हथि जोरु करि चैखै सोइ।

नानक उतमु नीचु न कोइ।।

वह परमात्मा सर्वशक्तिमान है, वह सृष्ठि की रचना करता है आक्र फिर उसकी देखभाल भी। हे नानक! मनुष्य स्वयं अपने बल से अच्छा–बुरा नहीं बन सकता। सभी में वही अंतःप्रेरणा देता है ताकि जीव उसकी राह पर चलकर उसे जान सके।

राती रुती थिती वार।

पवण पाणी अगनी पाताल।।

तिसु विचि धरती थापि।

रखी धरम साल।।

ऋतु, रात–दिन, तिथि, वार और वायु, जल, अग्नि, पाताल आदि के मध्य परमसत्मा द्वारा स्थित यह पृथ्वी धर्म पर अमल करने वाले यात्रियों लिए एक धर्मशाला है।

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग।

तिन के नाम अनेक अनंत।।

उसमें अनेक युक्तियों तथा रंगों के जीव हैं। उनके नाम अनेक तथा बेअंत हैं।

करमी करमी होइ वीचारु।

सचा आपि सचा दरबारु।।

उन सबका अपने–अपने कर्मो ˙ के अनुसार फल होगा। परमात्मा सत्य है तथा उसका दरबार और न्याय भी सत्य है।

तिथै सोहनि पंच परवाणु।
नदरी करमि पवै नीसाणु।।
कच पकाई ओथै पाइ।
नानक गइआ जापै जाइ।।34।।

उसके दरबार में स्वीकृत पूर्ण पुरुष, जाक सच्चे हैं और सच की कसौटी पर खरे उतरे हैं, वे ही शोभा पाते हैं। उन्हें ही उसकी स्वीकृति का चिन्ह मिलता है।

कच्चे और पक्के अर्थात अधूरे एवं पूर्ण होन की परीक्षा वहीं होमी है। हे नानक! वहां पहुंचकर सभी पहचाने जाएंगे।

धरम खंड का एहो धरमु।
गिआन खंड का अखहु करमु।।

अब तक धर्म(कर्त्तव्य) की मंझिल की बात बताई गई, अब आगे ज्ञान(विचार) की बात बताते हैं। इस ज्ञान में परमात्मा और उसकी सृष्टि—दोनों की जानकारी है।

केते पवणु पाणी वैसंतर
केते कान महेस।।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि
रूप रंग के वेस।।

सृष्टि में कितना ही पानी, आग और हवाएं हैं; कितने—कितने ही कृष्ण एवे महेश हैं; कितने ही ब्रह्मा कई रंगों तथा कई वर्णों की रचना में लगे हुए हैं।

गुरु नानकदेव जी के अनुसार, आत्मा और परमात्मा के बीच की यात्रा पांच पड़ावों में होती है। ये हैं—धर्मखंड, ज्ञानखंड,श्रमखंड,कर्मखंड और सचखंड। जब साधक एक पड़ाव पर ईमानदारी से पहुंच जाता है तो उसकी आगे की यात्रा प्रभु कृपा से सहज हो जाती है। यहां बेईमानी के लिए कोई जगह नहीं है। जो ऐसा करता है वह आगे नहीं बढ़ पाता है। अतः साधक को चाहिए कि वह प्रभु कृपा का अनुभव सदैव करता रहे।

केतीआ करम भूमी मेर
केते केते धू उपदेस।।
केते इंद चंद सूर
केते केते मंडल देस।।
केते सिध बुध नाथ
केते केते देवी वेस।।

कर्म करने को भी कितनी पृथ्वियां हैं और सुमेरु जैसे कई पर्वत हैं। जहां ध्रुव जैसे कितने ही लोगों को उपदेश मिला है। कितने ही इंद्र, चंद्र आक्र सूर्य हैं। कितने ही लोक आक्र खंड हैं। चहां कितने ही सिद्ध, बुद्ध, नाथ और देवी के स्वरूप हैं।

अतः परमात्मा की सृष्टि का कोई पारावार नहीं है। अनगिनत भक्त हैं। साधना की परंपराएं, साधन और साधकों की कोटियां अनेक हैं। सभी अपने–अपनक तरीकों से उसे भजते हैं।

केते देव दानव मुनि
केते केते रतन समुंद।।
केतीआ खाणी केतीआ बाणी
केते पात नरिन्द।।
केतीआ सुरती सेवक
केते नानक अंतु न अंतु।।35।।

कितने ही देवता, दैत्य और मुनिजन हैं। कितने ही समुद्र एवं उनमें से निकले रत्न हैं। जीवों के भी कई प्रकार हैं। उनकी कितनी ही भाषाएं तथा ध्वनियां आदि हैं। कितने ही बादशाहों के वंश हैं।कितने ही उच्च विचार युक्त सेवा करने वाले हैं। हे नानक! परमात्मा की इस सृष्टि का कोई अंत नहीं है।

जब यह बात एकदम सच है तो संसार के बारे में ज्यादा से ज्यसदा जानकारी हासिल करने की कोशिशों का क्या लाभ ? क्योंकि न उन्हें पूरी तरह कोईजान पाता है और न ही जान पाएगा।

गिआन खंड महि गिआन परचंडु।

तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु।।

विचार की बातें कितनी ज्ञानमय और कितनी प्रकाशमय हैं। ज्ञानमयजाने केबाद छोटी से छोटी चीज देखने या सुनने पर भी मनुष्य को अनिर्ववचनीय आनंद तथा आश्चर्य का अनुभव होता है।

सरम खंड की बाणी रूपु।

तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूप।।

श्रम की अवस्था में पहुंचकर धर्म की प्रेरणा रूप के द्वारा होती है, जिसके सौंदर्य के आचरण की रचना अति सुंदर है।

ता कीआ गला कथीआ नाजाहि।

जे को कहै पिदे पछुताइ।।

उस अवस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता। यदि कोई चेष्टा भी करे तो उसे बाद में पछताना पड़ता है।

तिथै धड़ीऐ सुरति मति बुधि।

तिथै धड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि।।36।।

उस अवस्था में सुरति(वृत्ति), बुद्धि तथा हृदयका सुधार होता है। इससे जीव में देवताओं और सिद्धों जैसी अलौकिक समझ का निर्माण होता है। साधना में चमत्कारों की घटना इसी स्तर पर होती है, लेकिन संतों ने इसे भटकाव कहा है।

करम खंड की बाणी जोरु।

तिथै होरु न कोई होरु।।

तिथै जोध महा बल सूर।

तिन महि रामु रहिआ भरपूर।।

कर्म खंड की रचना आत्मबल से हुई है। उस अवस्था में कोई और नहीं, महान बल वाले मात्र वही योद्धा पहुंचते हैं जिनके तन–मन में राम(ईश्वर) पूर्ण रूप से समा चुका है। ऐसी स्थिति में भक्त साधक को संसार के कण–कण में परमात्मा के दर्शन होते हं।

तिथै सीतो सीता महिमा माहि।

ताके रूप न कथनै जाहि।।

वहां राम ऐसे समाया दिखता है, जैसे कपड़े में धागा। इसका रूप बखान से परे है। कपड़ा कहें तो सच नहीं और धागा कहें तो ठीक नहीं लगता, क्योंकि धागा दिखता नहीं।

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि।

जिन कै रामु वसै मन माहि।।

जिनके हृदय में राम बस गया है, उन्हें न तो कोई ठग सकता है और न ही मार सकता है। ऐसे व्यक्ति को माया भ्रमित नहीं कर पाती।

तिथै भगत वसहि के लोअ।

करहि अनंदु सचा मनि लोइ।।

इस अवस्था की मंजिल में जो भक्त बसते हैं, वे सदा परमात्मा को अपने हृदय में रखते हुए आनंद और प्रसन्नता से काम करते हैं।

सच खंडि वसै निरंकारु।

करि करि वेखै नदरि निहाल।।

निराकार परमात्मा सत्य में स्वयं वास करता है और सृष्टि की रचना करके अपनी कृपा दृष्टि से उसकी रक्षा करता है।

तिथै खंड मंडल वरभंड।

जे को कथै त अंत न अंत।।

वहां पहुंचकर ही जाना जाता है कि परमात्मा के बनाए कितने देश, लोक और ब्रह्मांड हैं। उसके बखान करने का कोई अंत नहीं।

तिथै लोअ आकार।

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार।।

संसारों पर संसार और उनमें आकार ही आकार अर्थात अनगिनत शक्लें–उनको जैसे–जेसै परमात्मा की आज्ञा मिलती है, वेसै–वेसै ही कार्य करते हैं। सब परमात्मा के आदेश के अधीन हैं।

वेखै विगसै करि वीचारु।

नानक कथना करड़ा सारु।।37।।

मनुष्य उसके व्यवहार और कार्यों को देखकर विचाररूपी आनंद तो पा सकता है, परंतु हे नानक! उसका वर्णन करना लोहे के चने चबाना जैसा है।यहां गुरु नानक देव जी ने ज्ञानी और भक्त के अंतर की ओर संकेत किया है। परमात्मा की सृष्टि ज्ञानी को तनाव देती है, वह उससे दुखी

और परेशान होता है। जबकि भक्त जगत को परमात्मा की अनुपम कृति मानकर आनंदित होता है।

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु।
अहरणि मति वेदु हथीआरु।।
भउ खला अगनि तपताउ।
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि।।
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल।

अंत में गुरुजी ने एक सच्चे आचरण वाले मनुष्य को गढ़ने की विधि बताते हुए कहा है किसंयम का सहारा, धैर्य रूपी सुनार, बुद्धि स्पी भट्टी तथा ज्ञान का हथौड़ा लेकर और परमात्मा का निर्मल खौफ फंकू कर कठोर परिश्रम की अग्नि जलाओ। फिर प्रेम भाव का बरतन बनाकर उसमें अपने इस अमर जीवन को ढालो। इस प्रकार ऐ सच्चा टकसाली आचरण गढ़ा जाता है। परमात्मा की राह पर चलना आसान नहीं है।

जिन कउ नदरि करमु तिन कार।।
नानक नदरी नदरि निहाल।।38।।

यह कार्य भी उनका है अर्थात ऐसा आचरण उन्हीं मनुष्यों का होता है, जिन पर प्रभु की कृपादृष्टि हो। प्रभु कृपा प्राप्त लोग ही ऐसे कार्य कर सकते हैं। ऐसे जीव ही परमात्मा की दया दृष्टि से निहाल हाक जाते हैं अर्थात प्रभु में रम जाते हैं। दूसरे शब्दों में परमात्मा मे लीन हो जाते हैं।

पवणु गुरु पाणी पिता
माता धरति महतु।।
दिवसु राति दुइ दाई
दाइआ खेलै सगल जगतु।।

इस अंतिम श्लोक में गुरुजी ने मानव–जीवन के अस्तित्व, स्थिति और स्वरूप तथा उसके लक्ष्य की प्राप्ति को बहुत सुंदर स्पक द्वारा स्पष्ट किया है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि सांसारिक जीवों के लिए वायु गुरु हैं, क्योंकि यही जीवन को चलाने वाला है। जल पिता है और धरती माँ है। इन दोनों के मिलन से वनस्पतियां उपतजी हैं। इसके अलावा दिन और रात–ये दोनों जीवों को खेल खिलाने वाले सेवक–सेविकाएं हैं। आध्यात्मिक सत्य को व्यवहार के साथ जोड़कर कहा गया यह श्लोक

परमात्मा और उसके संसार की दूरी को पूरी तरह से मिटा देता है।

चंगिआईआ बुरिआईआ
वाचै धरमु हदूरि।।
करमी आपो आपणी
के नेड़ै के दूरि।।

धर्मराज का रूप होकर परमात्मा स्वयं ही हमारे अंदर बैठकर अच्छे–बुरे कर्मों का लेखा जांचता है। अतएव अपने–अपने कर्मानुसार कोई परमात्मा के समीप हो जाता है और कोई उससे दूर।

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि।।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि।।

जिन्होंने नाम स्मरण किया है, वे तो अपना जीवन सफल कर गए। हे नानक! उन उजले मुख वालों की संगति से अनेक लोग भी मुक्त हो गए।

रेकी के पवित्र सिद्धांत

रेकी के इन पवित्र सिद्धांतो को अपनाने से जीवन में आनन्द,शान्ति स्वास्थ्य एवं सौभाग्य का आगमन होता है।

1.मैं आज के दिन सबका सम्मान करुँगा।

2.मैं आज के दिन सभी जीवों से प्रेम करुँगा।

3.मैं आज के दिन सबके प्रति करुणावान रहूँगा।

4.मैं आज के दिन कुदरत एवं परमात्मा का शुक्रगुज़ार रहूँगा।

5. मैं आज के दिन पूर्णतया ईमान के साथ अपनी रोजी रोटी कमाऊँगा।